

SMT. SITAVVA DUNDAPPA JODATTI

Smt. Sitavva Dundappa Jodatti is the Chief Executive Officer of Mahila Abhivruddhi Mattu Samrakshna Samsthé (MASS). MASS is a registered membership organization of women of Belagavi District, Karnataka, India, dedicated as devadasis. However, more than an organization, it is a social movement to empower women and girls from dalith and other historically socio- economically oppressed communities to resist being dedicated as devadasis and to secure their legitimate rights and entitlements, including the right to a life of security and dignity and a right to build a better future for their children.

2. Born on March 27, 1973 in Kabbur Village of Belagavi District, Karnataka, Smt. Jodatti was dedicated as a devadasi when she was 7 years old and was in Class 1, and in her new clothes and green bangles. She was happy to be the centre of attraction. It was not until she was in Class 7 that she was given to a man. It was because her parents were influenced by some of their friends that she was dedicated to Goddess Yellamma. Smt. Jodatti were 6 daughters in the family, and there were no sons. Three of her sisters died in childhood. Her parents were told that making a daughter a devadasi would ensure that at least one girl would remain unmarried and be a source of support to her parental home. Her father was unwilling but eventually got persuaded. However, after the dedication ceremony he did not allow her to drop out of school and so she was able to study up to Class 7. In school the others made fun of her saying that since she was married to the Goddess, any man could have her. She felt bad but did not stop studying. Then her father got very ill and it reached a point where there was almost no food at home. She had just finished Class 7 and that was when she was told she could not study any more.

3. Supported by a senior management team and cadres of field staff, Smt. Jodatti hold overall responsibility for the efficient and effective implementation of the following key programmes of MASS: Preventing the revival of the devadasi tradition and its associated rituals that have now been almost completely controlled in Belagavi District, and supporting agencies with similar interest in containing the tradition in other devadasi-endemic districts of Karnataka. This involves public education, campaigns, and managing an active system of constant vigilance through a network of volunteers. Protecting exploited and vulnerable women and children from various gender/religion/tradition based negative discriminations and engaging in collective actions against devadasi traditions, human trafficking, child marriage, violence against women and children, etc. Apart from public education and campaigns this involves interventions in specific cases of discrimination and violence, and joint actions with governmental, judicial and community-based agencies. Ensuring that all women of Belagavi District in general and devadasis and dalit women in particular, have a system and a place that they can approach with confidence when they are in difficult situations and require legal assistance. This involves running a legal help desk and conducting programmes towards making the legal and social environment more conducive to safeguard the rights of women and children and act against those who violate those rights.

4. Till date, Smt. Jodatti have gained 21 years of experience in MASS, and her growth has been through the several positions and programmes 1991-1996 : she was a SHG (self-help group) member in Kabbur village of Chikkodi block. She participated in training programmes, regular discussions in the weekly meetings, and awareness programmes. From 1996-2000 she worked as a volunteer for the Karnataka State Woman State Corporation (KSWDC). From 2000 -2001 she was selected as a Director on the Board of MASS and also served as Member-Secretary to MASS. From 2001 -2004, she worked as a Promoter in Hukkeri Block. From 2004 -2006, she worked as a Promoter in Chikkodi Block and my work was the same as what she did in Hukkeri Block in the previous years. From 2002 -2006, alongside the work detailed above, in this period she also as a resource person to KSWDC and was invited from time to time to give training to devadasi women in other districts (Bagalkote, Bijapur, Raichur, Koppal) on topics of SHG development, building organizations similar to MASS, and implementing dedication prevention programmes. From 2006 -2009, she worked in Raibagh Block as Community Organiser in the implementation of a child education programme for dalit children, supported by Every Child-UK. From 2010 – 2011, she was deputed from MASS to work as a Woman Coordinator for Shree Gowthama Grama Kalyana Kendra of Bagalkote District, an NGO supported by Every Child-UK. From 2011 – 2012, she worked as a Para Legal Officer for the entire district of Belagavi. From 2012 onwards she was appointed by the Board of Directors of MASS to lead the organization as its Chief Executive Officer. When she took charge, MASS was not having any major funding source, (only two small programmes : Every Child – UK, localized to Raibagh, and CRY, localized to a few villages in Chikkodi Block) and hence, many staff had to be relieved. Since then she have been able to mobilize credit of Rs. 80 million from microfinance institutions and supported 236 SHGs. This programme is going on and expecting to touch Rs. 100 million by March 2018. Apart from overseeing the management of MASS, she continues to be directly involved in the Legal Support Programme and the Microcredit Programmes of MASS. MASS believes in team work, and in all that she have done, she have had the support of her staff colleagues, the members of MASS, the SHG members, the partner agencies of MASS, and the local community groups.



श्रीमती सीतव्वा दुंडप्पा जोडट्टि

श्रीमती सीतव्वा दुंडप्पा जोडट्टि महिला अभिवृद्धि मत्तु संरक्षण समस्ते (एमएएसएस) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। एमएएसएस बेलगावी जिला, कर्नाटक, भारत की देवदासियों के रूप में समर्पित महिलाओं का पंजीकृत सदस्यता वाला संगठन है। तथापि, संगठन से बढ़कर यह एक सामाजिक आन्दोलन है जो दलितों और ऐतिहासिक रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से पददलित समुदायों की महिलाओं और लड़कियों को देवदासियों के रूप में समर्पित किए जाने का विरोध करने तथा सुरक्षा एवं सम्मान के जीवन के अधिकार तथा अपने बच्चों के लिए बेहतर भविष्य के निर्माण के अधिकार सहित अपने विधिसम्मत अधिकारों और हकदारियों को सुरक्षित करने के लिए सशक्त बनाता है।

2. आपका जन्म 27 मार्च, 1973 को बेलागावी जिला, कर्नाटक के काबुर गांव में हुआ। आपको सात वर्ष की उम्र में देवदासी के रूप में समर्पित किया गया जब आप पहली कक्षा में थीं और नई पोशाक तथा हरी चुड़ियां पहनी हुई थीं। आप आकर्षण का केन्द्र बनकर खुश थीं। जब आप कक्षा 7 में थीं तो आपको एक पुरुष को सौंप दिया गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि आपके माता-पिता अपने कुछ मित्रों से प्रभावित हुए कि आपको देवी येलम्मा को समर्पित कर दिया गया था। आप परिवार में छः पुत्रियों में से थीं और कोई पुत्र नहीं था। आपके तीन बहनें बाल्यावस्था में स्वर्गवास हो गई थीं। आपके माता-पिता को यह कहा गया कि एक पुत्री को देवदासी बना देने से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि कम से कम एक पुत्री अविवाहित रहेगी और अपने माता-पिता के घर के लिए सहायता का स्रोत बनी रहेगी। आपके पिताजी इसके लिए इच्छुक नहीं थे किंतु अंततः उन्हें मना लिया गया। तथापि, समर्पण समारोह के बाद आपके पिता ने आपको विद्यालय नहीं छोड़ने दिया और इसलिए आप कक्षा सात तक पढ़ाई कर पाईं। विद्यालय में दूसरे बच्चे आपका यह कहकर मजाक उड़ाया करते थे कि चूंकि आपका विवाह देवी से करा दिया गया है, इसलिए कोई भी पुरुष आपको प्राप्त कर सकता है। आपको बुरा लगता था किंतु आपने पढ़ाई नहीं छोड़ी। उसके बाद आपके पिता बहुत बीमार हो गए और ऐसी स्थिति आ पड़ी जब घर पर खाने के लिए कुछ नहीं था। आपने उस समय कक्षा सात उत्तीर्ण ही की थी जब आपसे यह कहा गया कि आप उसके आगे पढ़ाई नहीं कर सकती हैं।

3. वरिष्ठ प्रबंधन दल तथा फील्ड स्टाफ के काडरों के समर्थन से आपने एमएएसएस के निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रमों के दक्ष एवं प्रभावकारी कार्यान्वयन के लिए समग्र उत्तरदायित्व धारण किया : देवदासी परम्परा और इससे जुड़ी रीतियों, जो अब बेलगावी जिले में लगभग पूर्णतया नियंत्रित कर ली गई हैं, के दोबारा प्रचलित होने को रोकना तथा कर्नाटक के दूसरे देवदासी प्रभावित जिलों में इस परम्परा को रोकने के समान हित वाली एजेंसियों का समर्थन करना। इसमें स्वयंसेवियों के नेटवर्क के माध्यम से सार्वजनिक शिक्षा, अभियान तथा सतत निगरानी की सक्रिय प्रणाली का प्रबंधन करना शामिल है। यह शोषित और अति संवेदनशील महिलाओं एवं बच्चों को विभिन्न जेंडर/धर्म/परम्परा आधारित नकारात्मक भेदभाव से सुरक्षित करने और देवदासी परम्पराओं, मानव दुर्व्यापार, बाल विवाह, महिलाओं एवं बच्चों के प्रति हिंसा आदि के विरुद्ध सामूहिक कार्रवाइयों में सहयोग करने का कार्य भी करता है। सार्वजनिक शिक्षा एवं अभियानों के अलावा, यह भेदभाव और हिंसा के विशिष्ट मामलों में क्रियाकलाप तथा सरकारी, न्यायिक और समुदाय आधारित एजेंसियों के साथ संयुक्त कार्रवाइयों में भी शामिल है। यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि सामान्यतया बेलगावी जिले की सभी महिलाओं तथा विशेषकर दलित महिलाओं के लिए एक प्रणाली और स्थान हो जिससे वे कठिन स्थितियों एवं कानूनी सहायता आवश्यक होने के दौरान विश्वास के साथ संपर्क कर सकें। इसमें एक कानूनी हेल्प डेस्क को चलाना और महिलाओं एवं बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा करने तथा इन अधिकारों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए और अधिक अनुकूल कानूनी एवं सामाजिक माहौल बनाने हेतु कार्यक्रम आयोजित करना शामिल है।

4. अब तक, आपको एमएएसएस में 21 वर्षों का अनुभव हो गया है तथा आपका विकास वर्ष 1991-1996 के दौरान कई हैसियतों और कार्यक्रमों के माध्यम से हुआ है : आप चिकोदी ब्लॉक के काबुर गांव में स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सदस्य रहीं। आपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों, साप्ताहिक बैठकों में नियमित चर्चाओं तथा जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया। वर्ष 1996-2000 से आपने कर्नाटक स्टेट वूमन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (केएसडब्ल्यूडीसी) के लिए स्वयंसेवी के रूप में कार्य किया। वर्ष 2000 से 2001 तक आप एमएएसएस के बोर्ड में निदेशक के रूप में कार्य करने के लिए चयनित की गईं तथा एमएएसएस के सदस्य-सचिव के रूप में भी कार्य किया। वर्ष 2001 से 2004 तक आपने हुकेरी ब्लॉक में प्रोमोटर के रूप में कार्य किया। वर्ष 2004 से 2006 तक चिकोदी ब्लॉक में प्रोमोटर के रूप में कार्य किया और यह कार्य पिछले वर्षों में हुकेरी ब्लॉक में किए गए कार्य के समान था। वर्ष 2002 से 2006 तक ऊपर वर्णित कार्य के साथ-साथ इस अवधि में आप कर्नाटक स्टेट वूमन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (केएसडब्ल्यूडीसी) के संसाधन व्यक्ति के रूप में भी रहीं तथा आपको स्वयं सहायता समूह के विकास, एमएएसएस की तरह संगठन बनाने और समर्पण निवारण कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के विषयों पर दूसरे जिलों (बगालकोट, बीजापुर, रायचूर, कोप्पल) में देवदासी महिलाओं को प्रशिक्षण देने के लिए समय-समय पर आमंत्रित किया गया। वर्ष 2006 से 2009 तक आपने एवरी चाइल्ड-यूके के सहयोग से दलित बच्चों के लिए बाल शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में सामुदायिक संगठनकर्ता के रूप में रायबाग ब्लॉक में कार्य किया। वर्ष 2010 से 2011 तक आपको बगालकोट जिले के श्री गौतम ग्राम कल्याण केन्द्र, एवरी चाइल्ड-यू के की सहायता वाले एनजीओ के लिए महिला समन्वयकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए एमएएसएस से प्रतिनियुक्त किया गया। वर्ष 2011 से 12 तक आपने संपूर्ण बेलागावी जिले के लिए परा-कानूनी अधिकारी के रूप में कार्य किया। वर्ष 2012 से आपको मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में संगठन का नेतृत्व करने के लिए एमएएसएस के निदेशक मंडल द्वारा नियुक्त किया गया। जब आपने इसका कार्यभार संभाला तो एमएएसएस के पास वित्तपोषण का कोई बड़ा स्रोत नहीं था, (केवल दो छोटे कार्यक्रम थे : एवरी चाइल्ड-यूके, जो रायबाग तक सीमित था तथा सीआरवाई, जो चिकोदी ब्लॉक में कुछ गांवों तक सीमित था) और इसलिए कई स्टाफ को कार्यमुक्त करना पड़ा। उसके बाद आप सूक्ष्म वित्तपोषण संस्थानों से 80 मिलियन रुपए का ऋण प्राप्त करने में सफल रहीं और आपने 236 स्वयं सहायता समूहों की सहायता की। यह कार्यक्रम जारी है और मार्च, 2018 तक 100 मिलियन रुपए तक पहुंचने की आशा है। एमएएसएस के प्रबंधन की निगरानी करने के अलावा, आप एमएएसएस के कानूनी सहायता कार्यक्रम तथा माइक्रो क्रेडिट कार्यक्रमों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं। एमएएसएस टीम वर्क में विश्वास करता है तथा आपने जो भी कार्य किया है उसके लिए आपको अपने सहयोगियों, एमएएसएस के सदस्यों, स्वयं सहायता समूह के सदस्यों, एमएएसएस की पार्टनर एजेंसियों तथा स्थानीय सामुदायिक समूहों का सहयोग प्राप्त हुआ है।